International Journal of Social Science and Education Research
www.socialsciencejournals.net
Online ISSN: 2664-9853, Print ISSN: 2664-9845
Received: 17-07-2021, Accepted: 01-08-2021, Published: 17-08-2021
Volume 3, Issue 2, 2021, Page No. 17-18

पवित्र तुलसी

डॉ. भावना आचार्य
सह आचार्य, संस्कृत, राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश
मानव सभ्यता का उदय और प्रारंभिक आश्रय प्रकृति अर्थात् वन–वृक्ष ही रहे हैं। हमारी मूल संस्कृति आरण्यक ही रही है तथा वृक्ष व वनस्पति को हम सम्मान देते रहे हैं क्योंकि प्रारंभ से लेकर आज तक वृक्षों व वनस्पतियों ने हमारे जीवन की प्रत्येक छोटी–बड़ी आवश्यकताओं को न केवल पूर्ण किया है बल्कि अपने विशिष्ट गुणों से वातावरण को स्वच्छ व हमारे शरीर को स्वस्थ रखकर संपूर्ण मानव–जाति पर उपकार किया है। यही कारण है कि हम अपने पादपों में देवताओं का निवास मानते हैं।
इन्हीं में प्रकृति देवी का प्रधान अंश मानी जाने वाली है मांगलिक और पवित्र तुलसी । संस्कृत में तुलसी का अर्थ है – अद्वितीय या बेजोड़ । इसे ही Queen of Herbs भी कहा गया है। वनस्पति शास्त्र की भाषा में इसे Ocimum Sanctum (ओसिमम सेन्क्टम) कहा जाता है। ये धरती की ऐसी पावन अमृत–जड़ी है, जो न केवल पाप दूर करने वाली है, बल्कि रोगनाशक और सौन्दर्यवर्धक औषधि भी है। इसकी जड़ में सभी तीर्थ, मध्य में देवी–देवता और ऊपरी शाखाओं में वेद स्थित है।
घर के आंगन में तुलसी का पौधा न सिर्फ वातावरण को पवित्र कर सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता हैं बल्कि घर में निवास करने वालों को अच्छे स्वास्थ्य और मन की शांति का वरदान देता है। उसकी पत्तियों को छूकर बहने वाली हवा घर में कीटाणुरोधी और रोगनाशक गुणों का प्रसार करती है।

मूल शब्दः तुलसी, मांगलिक, औषधि, वनस्पति, पवित्र

प्रस्तावना
मानव सभ्यता का उदय और प्रारंभिक आश्रय प्रकृति अर्थात् वन–वृक्ष ही रहे हैं। इन्हीं में प्रकृति देवी का प्रधान अंश मानी जाने वाली है मांगलिक और पवित्र तुलसी । केवल धार्मिक, आध्यात्मिक या पर्यावरणीय दृष्टि से ही नहीं, अपितु शरीर–स्वास्थ्य की दृष्टि से भी तुलसी बहुत महत्त्वपूर्ण है।

अध्ययन क्षेत्रः संस्कृत साहित्य, पुराण, सुश्रुत संहिता
मानव सभ्यता का उदय और प्रारंभिक आश्रय प्रकृति अर्थात् वन–वृक्ष ही रहे हैं। हमारी मूल संस्कृति आरण्यक ही रही है तथा वृक्ष व वनस्पति को हम सम्मान देते रहे हैं क्योंकि प्रारंभ से लेकर आज तक वृक्षों व वनस्पतियों ने हमारे जीवन की प्रत्येक छोटी–बड़ी आवश्यकताओं को न केवल पूर्ण किया है बल्कि अपने विशिष्ट गुणों से वातावरण को स्वच्छ व हमारे शरीर को स्वस्थ रखकर संपूर्ण मानव–जाति पर उपकार किया है। यही कारण है कि हम अपने पादपों में देवताओं का निवास मानते हैं।
इन्हीं में प्रकृति देवी का प्रधान अंश मानी जाने वाली है मांगलिक और पवित्र तुलसी । संस्कृत में तुलसी का अर्थ है – अद्वितीय या बेजोड़ । इसे ही फन्म्म्छ व्थ् भ्म्त्ठै भी कहा गया है। वनस्पति शास्त्र की भाषा में इसे व्ब्प्डन्ड ै।छब्ज्न्ड (ओसिमम सेन्क्टम) कहा जाता है। ये धरती की ऐसी पावन अमृत–जड़ी है, जो न केवल पाप दूर करने वाली है, बल्कि रोगनाशक और सौन्दर्यवर्धक औषधि भी है। इसकी जड़ में सभी तीर्थ, मध्य में देवी–देवता और ऊपरी शाखाओं में वेद स्थित है।
धार्मिक व पौराणिक ग्रंथों में तुलसी का बहुत महत्त्व माना गया है। पद्म पुराण में कहा गया है

पत्रं पुष्पं फलं मूलं शाखा त्वक् स्कन्धसंज्ञितम्।
तुलसीसंभवं सर्वं पावनं मृत्तिकादिकम्।। 1

तुलसी का पत्ता, फूल, फल, शाखा, छाल, तना और मिट्टी आदि सभी पावन हैं।
पद्मपुराण में विष्णुप्रिया तुलसी के सम्बन्ध में एक कथा मिलती है– ''एक बार श्रीकृष्ण की धर्मपत्नी सत्यभामा ने उन्हें तोलने का निश्चय किया। श्रीकृष्ण को तराजू के एक पलड़े पर बैठाया और दूसरे पर मूल्यवान गहने और सम्पत्तियां रखने लगी। पर कांटा अपनी जगह से हिला भी नहीं । आखिर कृष्ण की दूसरी पत्नी रुक्मिणी ने गहने वाले पलड़े पर तुलसी की एक पत्ती रख दी और दोनों पलड़े बराबर हो गए।
एक अन्य कथा के अनुसार तुलसी राधा की सखी थी किन्तु राधा ने इसे शाप दे दिया और ये धर्मध्वज के घर पैदा हुई। अनुपम सौन्दर्यवती तुलसी ने तप करके ब्रह्मा से वर मांग लिया कि मुझे पतिरूप में कृष्ण प्राप्त हों। पर उसका विवाह शंखचूड़ नामक राक्षस के साथ हो गया । शंखचूड़ को वरदान प्राप्त था कि जब तक उसकी स्त्री का सतीत्व भंग नही होगा, वह मर नही सकता । जब शंखचूड़ का उपद्रव बहुत बढ़ गया तो विष्णु ने शंखचूड़ का रूप धारण करके तुलसी का सतीत्व भंग कर दिया । शंखचूड़ के समाप्त हो जाने के बाद विष्णु ने तुलसी को वर दिया कि तुम्हारे सतीत्व का ही फल है कि तुम मुझे लक्ष्मी के समान प्रिय होगी। मान्यता है कि तभी से विष्णु के शालिग्राम रूप की तुलसी की पत्तियों से पूजा होने लगी।

ब्रह्मवैवर्त पुराण में तुलसी के आठ नामों को अष्टक में पिरोया गया है

वृंदा वृंदावनी विश्वपूजिता विश्वपावनी,
पुष्पसारा नंदिनीय तुलसी कृष्णजीवनी।
एतन्नामाष्टकं चैतस्तोत्रं नामार्थसंयुतम्,
यः पठेत्तां च संपूज्यं सोऽश्वमेधफलं लभेत्।।[2]

वहीं तुलसी के विभिन्न नाम और उसके औषधि सम्बन्धी गुणों का उल्लेख करते हुए कहा गया है

तुलसी सुरसा ग्राम्या सुलभा बहुमंजरी।
अपेतराक्षसी गौरी भूतघ्नी देवदुन्दुभिः।।
तुलसी कटुका तिक्ता हृद्योष्णादाहपित्तकृत्।
दीपनी कुष्ठकृच्छ्रास्त्रपार्श्वरुक्क फवातजित्।
शुक्ला कृष्णा च तुलसी गुणैस्तुल्या प्रकीर्त्तिता ।। [3]

हिन्दू धर्म की सबसे बड़ी विशेषता इसकी आध्यात्मिक मान्यताएं और आस्थाएं हैं। इसीलिए कहा गया है

जिस घर तुलसी करे निवास,
उस घर सदा विष्णु को वास ।

घर के आंगन में तुलसी का पौधा न सिर्फ वातावरण को पवित्र कर सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता हैं बल्कि घर में निवास करने वालों को अच्छे स्वास्थ्य और मन की शांति का वरदान देता है। उसकी पत्तियों को छूकर बहने वाली हवा घर में कीटाणुरोधी और रोगनाशक गुणों का प्रसार करती है। स्कंद पुराण में कहा गया है

तुलसी यस्य भवने प्रत्यहं परिपूज्यते।
तद्गृहं नोपसर्पन्ति कदाचित् यमकिंकराः।। [4]
तुलसी का पौधा लगाने, पालन करने, सींचने तथा ध्यान,

स्पर्श और गुणगान करने से मनुष्यों के पूर्व जन्मार्जित पाप जलकर विनष्ट हो जाते हैं।[5] वहीं ब्रह्मवैवर्तपुराण में कहा गया है कि प्रातःकाल तुलसी का दर्शन करने से सुवर्णदान का फल प्राप्त होता है।[6]

आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक– तीनों प्रकार के तापों का नाश कर सुख–समृद्धि देने वाली तुलसी का दर्शन करने पर वह सारे पाप–समूह का नाश कर देती है, स्पर्श करने पर शरीर को पवित्र बनाती है, प्रणाम करने पर रोगों का निवारण करती है, जल से सींचने पर यमराज को भी भय पहुँचाती है, आरोपित करने पर भगवान् श्रीकृष्ण के समीप ले जाती है और भगवान् के चरणों में चढ़ाने पर मोक्षरूपी फल प्रदान करती है।[7]

केवल धार्मिक, आध्यात्मिक या पर्यावरणीय दृष्टि से ही नहीं, अपितु शरीर–स्वास्थ्य की दृष्टि से भी तुलसी बहुत महत्त्वपूर्ण है। सर्वरोगसंहारक प्रवृत्ति के कारण औषधि–शास्त्र से भी इसका सम्बन्ध है। आयुर्वेद के ग्रंथों – चरक संहिता, सुश्रुत संहिता में इस महत्त्वपूर्ण औषधि की महत्ता बताई गई है। फ्रेंच डॉक्टर विक्टर रेसीन ने कहा है – ''तुलसी एक ॅवदकमत क्तनह है।'' स्वास्थ्य प्रदान करने वाले गुणों के कारण और इसकी चमत्कारी तथा प्रतिरोधक क्षमता की विशेषता के कारण इसे दैनिक जीवन में प्रयोग हेतु प्रमुखता से स्थान दिया गया है। आयुर्वेद में तुलसी को संजीवनी बूटी के समान माना जाता है। सारे शरीर का शोधन करने वाली जीवन–संवर्धक औषधि अनेक रोगों को दूर करने और उनकी रोकथाम करने में सहयक है। सुश्रुत महर्षि ने लिखा हैं –

कफानिलविषश्वासकास दौर्गन्धनाशनः।
पित्तकृतकफवातघ्नः सुरसः समुदाहृतः।। [8]

कफ, वात, विष–विकार, श्वास–खांसी और दुर्गन्ध नाशक तुलसी श्रेष्ठ औषधि है।

तुलसी में विद्युत्शक्ति अधिक होती हैं और इसके कारण सौरमंडल की विनाशकारी, हानिकारक किरणों का प्रभाव खाद्य पदार्थो पर नहीं होता क्योंकि ये कीटाणुनाशक होती है।

संपूर्ण धरा के लिए वरदान और मानव–जीवन के लिए अमृत तथा मोक्षदायिनी देवी स्वरूपा तुलसी का विवाह देवोत्थान एकादशी के दिन मनाया जाने वाला उत्सव है, जो देव–जागरण के पवित्र मुहूर्त के स्वागत के अवसर का आयोजन है। पुराणों के अनुसार कार्तिक शुक्ला एकादशी के दिन ही भगवान् श्रीहरि पाताल लोक के राजा बलि के राज्य से चातुर्मास का विश्राम पूरा कर वैकुण्ठ लौटे थे।

विष्णुप्रिया तुलसी में अन्तर्निहित शक्ति की एक दैवी व्यक्तित्व के रूप में भावना करते हुए तुलसी कवच स्तोत्र में उससे सिर से लेकर पाँव तक प्रत्येक अंग की रक्षा करने की प्रार्थना के साथ–साथ सुख–समृद्धि प्रदान करने की कामना भी की गई है।[9]

भारतीय संस्कृति में जिस प्रकार पुण्यसलिला गंगा कल्याण व मोक्ष प्रदान करने वाली है, उसी प्रकार धार्मिक अनुष्ठानों में आवश्यक रूप से प्रयोग में ली जाने वाली मांगलिक तुलसी भी सर्वदोष निवारक, सर्वसुलभ और सर्वोपयोगी कल्याणप्रदात्री औषधि है।

''ऊं श्री तुलस्यै विद्महे। विष्णुप्रियायै धीमहि। तन्नो वृन्दा प्रचोदयात्।''

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति में जिस प्रकार पुण्यसलिला गंगा कल्याण व मोक्ष प्रदान करने वाली है, उसी प्रकार धार्मिक अनुष्ठानों में आवश्यक रूप से प्रयोग में ली जाने वाली मांगलिक तुलसी भी सर्वदोष निवारक, सर्वसुलभ और सर्वोपयोगी कल्याणप्रदात्री औषधि है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पद्मपुराण – उ. खं., 24/2
2. ब्रह्मवैवर्तपुराण, प्रकृतिखण्ड – 22, 32–33
3. भावप्रकाश निघंटु, संस्करण 1998, पृष्ठ 509–510, श्लोक 63–64
4. स्कन्द पुराण, का.खं. 21.66
5. गरूड़पुराण–धर्मकांड, प्रेतकल्प 38/11
6. ब्रह्मवैवर्तपुराण, श्रीकृष्ण जन्म खंड – 103/62–63
7. पद्मपुराण, उ.खं. 56/22
8. सुश्रुत संहिता – सूत्र 46
9. ब्रह्माण्डपुराण – तुलसी कवच स्तोत्र 1–20